विद्या भवन बालिका विद्यापीठ,

शक्ति उत्थान आश्रम,लखीसराय।

विषय हिंदी। दिनांक- 23-08 -2021

वर्ग- अष्टम।

विषय शिक्षिका -सरिता कुमारी

पाठ 9

दोहा एकादश

---------कबीर

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगो कब।।

भावार्थ -कबीरदास इस दोहे में कहते हैं कि कभी भी कल पर कोई काम मत छोड़ो, जो कल करना है उसे आज कर लो और जो आज करना है उसे अभी कर लो। किसी को पता नहीं अगर कहीं अगले ही पल में प्रलय आ जाये तो जीवन का अंत हो जायेगा फिर जो करना है वो कब करोगे।

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।

मैं भी भूखा ना रहूं साधु न भूखा जाए।

संत कबीर दास इस दोहे के माध्यम से ईश्वर से प्रार्थना करते है कि हे ईश्वर मुझे उतना ही धन, देशअन्न, जल प्रदान कीजिए जिससे अपना पेट भर सकू अपना गुजारा कर सकू तथा कोई साधू भूखा न जाय इसका आशय यह है कि मेरे द्वार आने वाला मेहमान को भी भोजन कराए।

निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय।

बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय।।

अर्थात: जो हमारी निंदा करता है, उसे अपने अधिक से अधिक पास ही रखना चाहिए क्योंकि वह बिना साबुन और पानी के हमारी कमियां बताकर हमारे स्वभाव को साफ कर देता है।

दोस पराया देखके, चले हसंत हसंत।

अपना याद ना आवइ, जागको आदि ना अंत।।

यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देख कर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते हैं जिसका ना तो कोई आती है और ना ही अंत।

जाति न पूछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

सज्जन की जाति न पूछ कर उसके ज्ञान को समझना चाहिए। तलवार का मूल्य होता है न कि उसकी मयान का । उसे ढकने वाले खोल का।

माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर।

कर का मनका छाड़ि के, मन का मनका फेर।।

कवि कहते हैं कि हाथ में माला लेकर जपने से कुछ नहीं होता। अर्थात अपने मन को शुद्ध विचारों से भरें। यदि आपके मन में जो विचार भरे हैं तो माला फेरने से कुछ नहीं होगा।